UNIT-V

Gandhian Ideology-1.

महात्मा गांधी के विचारधारा का मूल सिद्धांत अहिंसा और सत्याग्रह, जिसे उन्होंने अपने जीवन में अमल में लाया। गांधीजी ने अहिंसा को सशक्त और सकारात्मक शक्ति माना और इसे एक समृद्ध समाज की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा। उनका उद्देश्य था समाज में न्याय, समानता और सार्वभौमिक समृद्धि की प्राप्ति करना, और इसे वे सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही संभव मानते थे।

गांधीजी ने अहिंसा को 'परम धर्म' और 'अपने आप को शक्तिशाली बनाने का एक माध्यम' बताया। उनका कहना था कि अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से बचना, बल्कि विचारों और भावनाओं में भी अहिंसा का पालन करना है। उनका मानना था कि सत्य के पथ पर चलने के लिए अहिंसा आवश्यक है, क्योंकि यह एक सकारात्मक और एकीकृत शक्ति है, जो समस्त समस्याओं का समाधान कर सकती है।

गांधीजी ने सत्याग्रह को भी अहिंसात्मक सत्य की खोज के रूप में परिभाषित किया। इसे उन्होंने एक आध्यात्मिक और नैतिकतंत्र सत्य की खोज में एक माध्यम के रूप में देखा; जिसके समाज को सुधारने में सहायक हो सकता है। सत्याग्रह का अर्थ है 'सत्य की दृढ़ता'।

अतः गांधी के विचारधारा में अहिंसा, सत्याग्रह, आत्म निर्भरता, और सार्वभौमिक समृद्धि की अवधारणाएं हैं। उन्होंने अपने जीवन में इन मूल सिद्धांतों को अमल में लाकर एक सामर्थ्यशाली और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा दी। उन्होंने दुनिया को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित किया।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept of History
S.B. College, Ara
M.A. (SEM-3);

Class- 01 (one)
mob: 8809947478
Email Id:
ukrai.saseram@gmail.com